आयापान (विशल्य करणी)

पी.आर. भट्ट
ग्राम : जाखणी, पो. कीर्तिनगर,
जनपद : टिहरी

वाल्मीकि रामायण में कहानी है कि लक्ष्मण मेघनाद द्वारा चलाई गयी शक्ति से मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े थे। तब रावण के राजवैद्य सुषेण के द्वारा हिमालय पर्वत से जिन चार दिव्य औषधियों को हनुमान जी के द्वारा मंगवाया गया, उनके नाम इस प्रकार है। विशल्य करणी, जो घाव मे घुसे हुए तीर को निकाल कर तुरंत ठीक कर देती थी, सौवर्णकरणी, जो मनुष्य की रंगत को लौटा कर पूर्व अवस्था में ले आती थी, मृत संजीवनी, जो चेतना को लौटाकर पुर्नजीवित कर देती थी तथा संधानी, जो क्षत–विक्षत शरीर को अस्थियों सहित जोड़ देती थी।

दक्षिणे शिखरे जाता महौषधिमिहानय।
विशल्यकरणी नाम्ना सौवर्णकरणी तथा।।
संजीवकरणीवीर संधानी च महौषधिम्।
संजीवनार्थेवीरस्य लक्ष्मणस्य त्वमानय।।

आज भी अनेक वैद्य इन बूटियों पर अनुसंधान कर रहे हैं। इनमें संजीवनी को आज तक कोई प्राप्त नहीं कर पाया है। लेकिन विशल्यकरणी के रूप में जिन दो औषधियों की पहचान हुई है इनके नाम इस प्रकार है; पहली कलिहारी तथा दूसरी आयापान। इनकी पहचान सुषेण वैद्य ने बतायी थी। ये बूटियां रात्रि के अंधकार मे चमकती है। लेकिन ये दोनों औषधियां रात में चमकती तो नहीं हैं, लेकिन दिन के प्रकाश में कलिहारी का पुष्प लाल रंग का दिखाई देता है जो चमकने का भ्रम पैदा करता है तथा दूसरी औषधि आयापान के पुष्प होते तो सफेद है लेकिन इसकी डंठल लाल रंग की होने के कारण प्रकाश का भ्रम पैदा कर देती है। यह पौधा खेतों तथा खलिहानों के आस–पास प्रचुरता से मिलता है। लोग इसको निरुपयोगी खरपतवार समझ कर उखाड़ कर फेंक देते हैं। यह नम स्थानों पर जहां सूर्य का प्रकाश कम पहुंचता है तथा ठंड़े स्थानों पर जहां धूप कम मात्रा में जा पाती है व पाला अधिक समय तक पड़ा रहता है वहां इसके पौधें बड़ी सरलता से उगकर फलते–फूलते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में इसे काला बांसा भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसको यूपोटोरियम आयापान कहते है। इसके गुणों की जानकारी सामान्य जन–मानस में न होने के कारण इसको निरपयोगी खरपतवार ही जाना जाता है जबकि आयुर्वेद में इसको एक चमत्कारी औषधि के रूप में जाना जाता हैं। संस्कृत में इसका एक नाम विशल्यकरणी भी है। जब समीप में किसी प्रकार की कोई अन्य औषधि उपलब्ध न हो उस अवसर पर इसका प्रयोग किसी चमत्कार से कम सिद्ध नहीं होता। घाव चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो इस के पत्तों के रस का प्रयोग तुरंत ही रक्त स्राव को रोक कर कुछ ही समय में घाव को सुखा कर निर्विष कर देता है। यदि घाव पर इसके रस को लगाने के साथ–साथ इसके पत्तों का रस भी साथ में पिया जाए तो और भी अधिक लाभ मिलता है। घावों को ठीक करने के लिए यह एंटी टिटनेस के इंजेक्शन से भी अधिक त्वरित गति से कार्य करता है। खुले घाव ठीक करने के अतिरिक्त यह आंतरिक घाव, रक्तातिसार, रक्त प्रदर, खूनी बवासीर आदि पर भी अच्छा असर दिखाता है। इसके कोमल पत्तों को कुचलकर निर्भयता के साथ इसके रस को दिया जा सकता है, क्योंकि इसके पत्तों में किसी प्रकार की कोई विशाक्तता नहीं होती।

होम्योपैथी में भी इसकी एक प्रभावशाली औषधि के रूप मे मान्यता है। इसके पौधें के रस से यूपोटोरियम पर्फ नामक औषधि बनायी जाती है, जिसका प्रयोग जुकाम, बुखार, खांसी से लेकर मलेरिया, निमोनिया, टाइफाइड आदि तक पर सफलता पूर्वक किया जाता है। नए अनुसंधानों में इसे

एड्स, हिप्पेटाइटिस तथा कैंसर आदि घातक बीमारियों में भी लाभदायक माना गया है। इस पर आज भी नित नए रोगों को ठीक करने के लिए अनुसंधान चल रहे है।

इंडियन मेडिसनल पलांट नामक पुस्तक के रचियता कर्नल कीर्तिकर तथा वी.डी. वसु के अनुसार "यह एक उत्तेजक औषधि हैं। कम मात्रा में इसका रस पौष्टिक तथा अधिक मात्रा में विरेचक होता है। इसका काढ़ा ज्वर निवारक होता है तथा मलेरिया बुखार मे उत्तम परिणाम देता है"। यदि हमें इस प्रकार की औषधीय वनस्पतियों की सही जानकारी हो जाए तो रसायनिक औषधियों के दुष्परिणामों से बच सकते है, जो कि तुरंत परिणाम दे तो दे देती है लेकिन दीर्घ काल में शरीर मे दूसरी घातक बीमारियों को भी जन्म देती है।

हिन्दी जोड़ने वाली भाषा है और इसको समृद्ध बनाने की जिम्मेदारी हम सबकी है।

.....अमिताब बच्चन.....